नवभारत टाइम्स कुरुक्षेत्र

जलधारा के बड़ी नदी होने के साफ संकेत : एक्सपर्ट

May 7, 2015, 09.00AM IST

Like Share ट्वीट 1

Luxury Homes in Gurgaon
Budget 1/2/3 BHK Homes in Gurgaon. Search From Over 1 Lac Listings!
indiahomes.com/Gurgaon+homes

1 Year Online MBA Rs.7500
100% 1 Year Online MBA. Approved & Accredited By IAO & AACBE. Join Now
www.nibmglobal.com/Online-MBA

Ads by Google

एस. पी. रावत, कुरुक्षेत्र

सरस्वती नदी की खुदाई के दौरान पानी निकलने की सूचना पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के जियोलॉजी (भू-विज्ञान) विभाग के चेयरमैन प्रो. डा. ए.आर. चौधरी बुधवार को अपनी टीम के साथ गांव मुगलावाली में सैंपल लेने के लिए पहुंचे। उन्होंने खुदाई के दौरान निकली परतें, रेत, बजरी और पानी के अलग-अलग स्थानों से सैंपल लिए। इन सैंपलों की कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के जियोलॉजी (भू-विज्ञान) विभाग में सरस्वती नदी शोध केन्द्र में रिसर्च की जाएगी।

उन्होंने बताया कि ऐसा लग रहा है कि जहां पर पानी निकला है यहां पर 7-8 हजार साल पहले एक बडा जल स्रोत बहता था। जो पानी अब खुदाई के दौरान यहां पर निकला, यह उसी चैनल का हिस्सा हो सकता है। इसकी पुष्टि के लिए रिसर्च के दायरे में हमें राजस्थान तक जाना होगा। उसके बाद ही शतप्रतिशत पुष्टि हो सकेगी और सभी शंकाएं दूर होंगी। उन्होंने बताया कि सरस्वती शोध संस्थान के चेयरमैन दर्शन लाल जैन के अनुसार मुगल और ब्रिटिश काल के रेवेन्यू रेकॉर्ड में सरस्वती नदी की जगह को दर्शाया गया है और आस-पास के लोगों ने इस चैनल के साथ साथ श्मशान घाट बनाए हुए हैं। उन्होंने कहा कि नासा से ली गई तस्वीरों और रेवेन्यू रेकॉर्ड और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार बिल्कुल सही जगह पर खुदाई हो रही है। प्राथमिक चरण में यह किसी पुरानी नदी का रिवर-बेड प्रतीत होता है। उन्होंने बताया कि रेत, पत्थरों व खनिजों की पांच परतें यहां नदी के होने को सिद्ध करती हैं। उन्होंने कहा कि कलायत में चट्टानों के सैंपल ट्रांस हिमालयन रेंज की चट्टानों के समान हैं जो मानसरोवर झील के निकट हैं। अब यहां पर 6-7 फुट पर पानी मिलने से इसकी प्रामाणिकता सिद्ध होती है। उनका कहना है कि बहुत सारी धाराएं मिलकर सरस्वती के वेग को बढ़ाती थीं। हो सकता है कि इनमें से एक धारा यही हो।

उनका यह भी कहना है कि उन्होंने आसपास के लोगों से बातचीत की। उन्होंने बताया कि सरस्वती की खुदाई के अलावा आमतौर पर यहां पानी का स्तर 100 मीटर दूर बहुत नीचे है। दिन भर यहां पर लोग सरस्वती की जलधारा देखने के लिए आते रहे, कुछ लोग पानी को बोतलों में डालकर अपने घर भी ले गए। मुगलवाली गांव के सरपंच सोमनाथ का कहना है कि अब उन लोगों को धार्मिक कामों के लिए हरिद्वार नहीं जाना पड़ेगा, अब उनके यहां

लगा दी है। वहीं अब सरस्वती पर संतों ने भी पूजा अर्चना करके सरस्वती जमीन पर आने के बाद उनमें भी खुशी की लहर है। मुगलवाली एक प्राचीन गांव है और यहां कभी ऋषि मोदगिल सरस्वती नदी के तट पर पूजा पाठ करते थे। स्वामी विनय स्वरूप के मुताबिक आदिबद्री के सभी संत यहां पहुंचे और यही पर ही उन्होंने सरस्वती की पूजा अर्चना कर जल ग्रहण किया। संतों ने कहा कि उन्हें काफी खुशी है क्योंकि सरस्वती के बारे में जो वेद पुराणों में लिखा था वही सब कुछ सामने आ रहा है।